ISSN 2277 - 7083

आधुनिक साहित्य

Aadhunik Sahitya

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved CARE Listed Journal

वर्ष/Year-12 अंक/Vol.-46 द्विभाषी/Bilingual

अप्रैल – जून / April – June 2023

UGC Approved CARE Listed Journal

आधुनिक साहित्य

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

वर्ष/Year-12 अंक/Vol.-46 अप्रैल - जून 2023/April – June 2023 द्विभाषी/Bilingual

Aadhunik Sahitya

संपादक
डॉ. आशीष कंधवे*
Editor
Dr. Ashish Kandhway

उप संपादक रजनी सेठ	Sub Editor Rajni Seth
प्रबंध संपादक ममता गोयनका	Managing Editor Mamta Goenka
सहायक संपादक डॉ. ऐश्वर्या झा	Assistant Editor Dr. Aishwarya Jha
संवाददाता (अंग्रेजी) निलांजन बैनर्जी	Correspondent (English) Nilanjan Banerjee
संरक्षकगण प्रो. उमापति दीक्षित कुमार अविकल मनु	Patron Prof. Umapati Dixit Kumar Avikal Manu

*आशीष कंधवे (मूल नाम आशीष कुमार)

आधुनिक साहित्य में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबन्धित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा दिल्ली क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में सम्पादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक हैं।

आधुनिक साहित्य

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved CARE Listed Journal

केंद्रीय हिंदी संस्थान के सहयोग द्वारा प्रकाशित

RNI No. DELBIL/2012/42547
ISSN 2277 - 7083

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक, अनुवादक अथवा आधुनिक साहित्य की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय
एडी-94-डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
फोन : 011-47481521, +91-9811184393
ई-मेल : aadhuniksahitya@gmail.com
adhuniksahitya@gmail.com

आलेख/रचना/कहानी में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं इससे प्रकाशक या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मूल्य : ₹ 500 प्रति अंक

शुल्क : तीन वर्ष (12 अंक) ₹ 6000
पांच वर्ष (20 अंक) ₹ 9000
(डाक/कोरियर खर्च सहित)
आजीवन सदस्यता ₹ 21,000
विदेश के लिए (3 वर्ष) 200 डॉलर

शुल्क **'AADHUNIK SAHITYA'** के नाम पर भेजें।

Account Name	:	Aadhunik Sahitya
Account No.	:	16800200001233
Bank	:	Federal Bank Ltd.
Branch	:	Shalimar Bagh New Delhi-110088
IFSC Code	:	FDRL0001680

'**आधुनिक साहित्य**' द्विभाषी त्रैमासिकी आशीष कुमार के स्वामित्व में और उनके द्वारा एडी-94डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित तथा आभा पब्लिसिटी, 163, देशबंधु गुप्ता मार्केट, करोलबाग, नई दिल्ली से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : डॉ. आशीष कुमार।

'AADHUNIK SAHITYA' A quarterly bilingual (Hindi & English) Journal of Literature, Culture & Modern Thinking owned/published/printed/edited by Ashish Kumar from AD-94-D, Shalimar Bagh, Delhi-110088 and printed at Abha Publicity, 163, Deshbandhu Gupta Market, Karolbagh, New Delhi.

- आचार्य (डॉ.) एस. हुसैन / *भाषा का प्रश्न एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति* / 150
- डॉ. माया शर्मा / *वैचारिक क्रांति में भाषा का योगदान* / 156
- डॉ. अशोक कुमार / *भाषा का प्रश्न और पूर्वोत्तर की हिंदी* / 162
- डॉ. विभाषा मिश्र / *भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय शिक्षा नीति* / 167
- सीमा देवी / *वर्तमान परिदृश्य में हिंदी भाषा की स्वीकार्यता एवं प्रासंगिकता* / 169
- नायराह कुरैशी / *भाषा का प्रश्न और दक्षिण का हिंदी साहित्य* / 174
- डॉ. शीलम भारती / *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा नीति का समीक्षात्मक अध्ययन* / 177
- डॉ. पूजा जग्गी / *बुराड़ी कांड में भाषा की भूमिका* / 183
- प्रीति पाण्डेय / *भाषा के प्रश्न और काशीनाथ सिंह* / 189
- जगबीर सिंह / *भाषा का प्रश्न और प्रवासी साहित्य* / 197
- डॉ. मलखान सिंह / *तुलसी का कबित्त विवेक* / 204
- कित्तीपोंग बुनकर्ड / *समकालीन कविताओं में रामायण का प्रभाव :रावण के पात्र के विशेष संदर्भ में* / 212
- प्रो. सुचिता त्रिपाठी / *काशी का साहित्यिक योगदान* / 217
- नीलम राठी / *रेडियो प्रसारण में सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन एवं अन्य प्रायोजित कार्यक्रमों की जनहितकारी भूमिका* / 224
- डॉ. अमित कुमार गुप्ता एवं डॉ. अपर्णा / *सॉफ्ट पावर : भारतीय विदेश नीति की अहम् रणनीति* / 233
- डॉ. सत्यप्रकाश सिंह / *स्वाधीनता आंदोलन और क्रांतिकारियों का जीवन तथा साहित्य* / 247
- सरिता कुमारी / *ज्योतिबा फुले का शिक्षा में योगदान : एक सामाजिक विश्लेषण* / 254
- पूनम शर्मा / *लोकनाट्य शैली : ख्याल* / 261
- डॉ. चारु आर्या / *समाचारों का राजनीतिकरण* / 267
- डॉ. लोकेश कुमार गुप्ता / *मीरा की कविता के पुनर्नवा भाव* / 272
- डॉ. राजेश कुमारी कौशिक / *पचपन खंभे लाल दीवारें : नारी द्वारा नारी शोषण की व्यथा-कथा* / 280
- डॉ. ममता चावला / *स्त्री-विमर्श के परिदृश्य में ध्रुवस्वामिनी* / 287

स्त्री-विमर्श के परिदृश्य में ध्रुवस्वामिनी

–डॉ. ममता चावला

ध्रुवस्वामिनी प्रसाद की अन्तिम एवं श्रेष्ठ कृति है। यह नारी की अस्मिता, उसके अधिकारों एवं स्वतंत्रता का सशक्त दस्तावेज है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया प्रसाद का यह नाटक न केवल नारी जीवन की समस्याओं को अंकित करता है बल्कि साथ–ही–साथ पुरुष प्रधान समाज के शोषण के विरुद्ध नारी के विद्रोह को भी प्रकट करता है।

स्त्री विमर्श, स्त्री जीवन का विमर्श है। जिसमें उसके अधिकार और अस्मिता को लेकर चिंतन प्रस्तुत किया जाता है। स्त्री विमर्श के माध्यम से साहित्य में, पितृसत्तात्मक समाज में निहित उन अंतर्विरोधों को, सामने रखा गया है, जो सदियों से, स्त्री के विरोधी रहे हैं। प्रसाद का नाटक ध्रुवस्वामिनी, भारतीय पारंपरिक मूल्यों के साथ प्रगतिशील मूल्यों के संघर्ष को रेखांकित करता है। इसमें लेखक ने धर्म, समाज, युग बोध, इतिहास, परंपरा सब को चुनौती देते हुए, नारी के अस्तित्व की आवाज को बुलंद करने की कोशिश की है जो कि उसकी प्रगतिशील चेतना का परिचायक है। यूं तो प्रसाद स्त्रियों में कोमल भावों की अपेक्षा रखते हैं पर पुरुष प्रधान समाज के द्वारा जब बलात, उनका अनुचित लाभ उठाया जाता है, तो उनकी ध्रुवस्वामिनी उसका विरोध करती है, और अपने अधिकार पाने में सफल भी होती है। वह, यह प्रमाणित करती है कि वह भी सभी अधिकारों की अधिकारिणी है।

बीज शब्द : स्त्री विमर्श , अधिकार, अस्मिता , पितृसत्तात्मक, अंतर्विरोधों , पारंपरिक , प्रगतिशील , युगबोध, बलात, अधिकारिणी

स्त्री–विमर्श सदियों से चली आ रही परम्पराओं, मान्यताओं के प्रति आक्रोश और उससे नारी मुक्ति का आह्वान है। यह अभिव्यक्ति है उस मौन की – जो सदियों से मौन बना रहने के लिए शापित / अभिशप्त था। यह विरोध करता है स्त्री के सदैव उपेक्षिता रहने का एवं प्रेरणा देता है स्त्री–पुरुषों के सम्बन्धों पर फिर से विचार करने की स्त्री–विमर्श के परिदृश्य में साहित्य के मूल्यांकन की आवश्यकता इसलिए भी बन जाती है। क्योंकि 'स्त्री' जिसे समाज की धुरी कहा जाता है, वह अनादिकाल से पुरुष प्रधान समाज के शोषणों का शिकार होती रही है।

स्त्री सृष्टि का आधार है। वह स्नेह, त्याग, ममता, बलिदान की साक्षात मूरत है। उसी के कारण जीवन में रस है और समाज में पूर्णता इतिहास, साक्षी है कि सृष्टि के आरम्भ से ही स्त्री ने पुरुष के साथ अभिन्न सहयोगिनी, बनकर अपने कर्तव्यों